

डॉ. ब्रूस वाल्टके, भजन, व्याख्यान 28

© 2024 ब्रूस वाल्टके और टेड हिल्लेब्रांट

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र 28 है, स्तोत्र का संपादन।

भजनों को समझने के विभिन्न तरीकों को संबोधित करते हुए, हमने भजनों और शाही भजनों के ऐतिहासिक संदर्भ को देखा।

हमने भजनों के विभिन्न रूपों को देखा। अंतिम घंटे में, हमने बुद्धि स्तोत्र को देखा जिसने स्तोत्र के संपादन में भूमिका निभाई। यह और भी स्पष्ट हो जायेगा।

हमने भजनों को देखने के युगांतशास्त्रीय, मसीहाई तरीके को देखा। इस व्याख्यान में, हम भजनों की पुस्तक के संपादन को देखेंगे, यह समझेंगे कि पुस्तक समग्र रूप से एक साथ कैसे फिट बैठती है।

अब जब हमने भागों पर विचार कर लिया है, तो आइए प्रार्थना से शुरुआत करें। पिता, हम आपसे हमारी सीखने और समझने की कृपा माँगते हैं। हम आपसे शक्ति और ऊर्जा माँगते हैं क्योंकि हमें इसकी आवश्यकता है। हम आपकी ओर देखते हैं। हम मसीह के नाम पर आप पर निर्भर हैं। तथास्तु।

इस व्याख्यान में, मैं सबसे पहले स्तोत्र के शीर्षकों पर संक्षेप में चर्चा करूँगा।

फिर मैं उस प्रक्रिया पर चर्चा करूँगा जिसके द्वारा भजनों को एकत्र किया गया और कैनन में उनकी अंतिम रचना तक एक साथ रखा गया। फिर अंततः पृष्ठ 344 पर, मुझे लगता है, मैं इन पुस्तकों को एक साथ रखने के तरीके के महत्व पर चर्चा करूँगा। भजन की पुस्तक वास्तव में, जैसा कि हम देखेंगे, पाँच पुस्तकें हैं।

इसे पाँच पुस्तकों में विभाजित किया गया है। लेकिन पूरी किताब को देखें तो हिब्रू बाइबिल में किताब का ऐसा कोई शीर्षक नहीं है। आम तौर पर बाइबल की किताबें, पेंटाटेच में होती हैं, उनका नाम पहले शब्द के आधार पर रखा जाता है।

तो, उत्पत्ति के हिब्रू में पहला शब्द बेरेशित है और वही नाम बन गया। निर्गमन में, आपके पास एले शोमोट है, जिसका अर्थ है नाम। और इसलिए, निर्गमन का शीर्षक उठाया गया है।

दूसरा शब्द है शोमोट. लैव्यिकस का पहला शब्द वायिकरा है, जिसे प्रभु ने बुलाया है। और इसलिए वह लैव्यिकस है।

भजन संख्या 4 में, पहली कविता में, इसका उल्लेख है कि यह जंगल, बामिदबार में था, और यही शीर्षक बन गया। संख्याएँ देवारिम से शुरू होती हैं, शब्द। लेकिन भजन संहिता की पुस्तक में, यह उस तरह से काम नहीं करता है।

मुझे कहना होगा कि पैगम्बरों के लिए, उनका नाम पैगम्बर के नाम पर रखा गया था। तो, इसका नाम यशायाह या ईजेकील या यिर्मयाह के नाम पर रखा गया है। लेकिन हिब्रू बाइबिल में ही इसका कोई नाम नहीं है।

भजन 72 में पुस्तक के पहले चरण का संदर्भ हो सकता है, जहां यह कहा गया है, जेसी के पुत्र डेविड की प्रार्थनाएं समाप्त हो गई हैं। और यह हो सकता है कि कोई पुराना संग्रह हो जिसे डेविड की प्रार्थनाएं कहा जाता था। लेकिन ऐसा लगता है कि यदि आप चाहें तो यह पुस्तक के पहले चरण का अंडे का छिलका है।

यहूदी साहित्य और रब्बी साहित्य में पुस्तक का शीर्षक ज़ेफिर तेहिलिम है। ज़ेफायर का अर्थ है किताब और तेहिलीम का अर्थ है प्रशंसा। इसे कभी-कभी संक्षेप में तेहिलिम या निर्माण रूप, तेहिलिम कहा जाता है, जिसका अर्थ है प्रशंसा की पुस्तक।

इसका नाम, ऐसा प्रतीत होता है, पुस्तक की सामग्री से पड़ा है क्योंकि जैसा कि हमने कहा, लगभग सभी भजनों में प्रशंसा है। एकमात्र भजन 88 है जिसमें प्रशंसा अनुभाग नहीं है। भजन 88 को स्तोत्र की काली भेड़ कहा जाता है।

मुझे अवश्य कहना चाहिए कि एक समय था जब मैं इस तथ्य से परेशान था कि एक ऐसा भजन था जिसमें कोई वास्तविक प्रशंसा खंड नहीं था, हालांकि इसमें इज़राइल के इतिहास में भगवान के कार्य का उल्लेख है। बस इसका एक संक्षिप्त संदर्भ। एक समय तक जब मैं बहुत थका हुआ और बहुत हतोत्साहित था, मुझमें प्रार्थना करने की भी ऊर्जा नहीं थी।

मुझे एहसास हुआ कि कम से कम स्तोत्र में प्रार्थना करने की ऊर्जा थी और वह अपने आप में मुक्तिदायी है। मैं इसके लिए आभारी था। लेकिन भजन, आपके पास पूरे भजन हैं जो प्रशंसा हैं, आपके पास प्रशंसा के आभारी गीत हैं।

मैंने कहा, विलाप के भजन भी प्रशंसा में डूबे हुए हैं। इसलिए, यह बिल्कुल उचित है कि इस पुस्तक को प्रशंसा की पुस्तक कहा जाए। सेप्टुआजेंट में इसे भजन के रूप में संदर्भित किया गया है, मुझे लगता है, भजन।

भजन शीर्षक वास्तव में सेप्टुआजेंट के प्रमुख कोडों में से एक से लिया गया है, जिसे कोडेक्स वेटिकनस कोडेक्स बी के रूप में जाना जाता है। यह 350 और 400 के बीच का है। वहां इसका शीर्षक स्तोत्र है। यह भजन के शीर्षक, डेविड के भजन का लिप्यंतरण या अनुवाद है, उदाहरण के लिए, हिब्रू शब्द मिज़मोर है।

इसका अनुवाद स्तोत्र में किया गया है। यह, ठीक है, कोडेक्स वेटिकनस में, यह स्तोत्र, स्तोत्र बन जाता है। कोडेक्स अलेक्जेंड्रिनस में, जो लगभग 400 ई.पू. का है, इसे Psalterion कहा गया है।

उसमें से हमने Psalter नाम विकसित किया। इसलिए कभी-कभी उस यूनानी प्रभाव के कारण, इसे भजनों की पुस्तक के रूप में जाना जाता है। अन्य समय में इसे स्तोत्र के रूप में संदर्भित किया जा सकता है।

जेरोम ने जब इसका अनुवाद किया, तो इसका नाम लेवा साल्मोरम, भजन की पुस्तक रखा। उन्होंने इसे स्पष्ट रूप से ग्रीक शब्द Psalmoi से लिया है। तो किसी भी मामले में, इसे भजन की पुस्तक कहा जाता है, जिसे तकनीकी रूप से अंग्रेजी में कहा जाता है, यह ग्रीक और लैटिन के माध्यम से होता है, और अंग्रेजी में इसे भजन की पुस्तक कहा जाता है।

कड़ाई से बोलते हुए, जैसा कि हमने देखा, भजन या मिज़मोर का मतलब एक तार वाले वाद्ययंत्र की संगत में गाया जाने वाला गीत था। लेकिन चूंकि पुस्तक में प्रशंसा का स्वर इतना मजबूत है कि भजन अब तार वाले वाद्ययंत्र पर गाए जाने वाले गीत को दर्शाता है, इसलिए प्रशंसा का स्वर इतना मजबूत है कि भजन प्रशंसा के गीत को दर्शाता है। तो इस तरह से आपको पुस्तक के शीर्षक की पृष्ठभूमि मिल जाती है।

तो मैंने हिब्रू शीर्षक, रब्बीनिक और उसके बाद के हिब्रू साहित्य के बारे में बात की, जिसमें ग्रीक बाइबिल में, कोडेक्स वेटिकनस में, इसे भजन कहा जाता है। कोडेक्स अलेक्जेंड्रिनस में, इसे Psalterium कहा जाता है, जो अंग्रेजी में Psalter के रूप में आता है। और लैटिन में जेरोम ने इसे लेवा साल्मोरम या बस साल्मोई कहा।

अतः इसका तात्पर्य संगीत वाद्ययंत्रों के साथ गाए जाने वाले गीत से है, परंतु इसका तात्पर्य एक पवित्र गीत या भजन से है। तो यह अंततः अंतिम व्याख्यान में हमारा परिचय कराता है, मैं उस पुस्तक का शीर्षक लेता हूँ जिसका हम इतने समय से अध्ययन कर रहे हैं।

दूसरा चरण जिसके बारे में हम बात करने जा रहे हैं वह यह है कि पुस्तक कैसे तैयार हुई, इसके संग्रह की प्रक्रिया क्या है। किसी ने खूब कहा है कि आप इसके संग्रह के बारे में ऐसे सोच सकते हैं जैसे बारिश की बूंदें झरनों और छोटी-छोटी धाराओं में बदल जाती हैं। वे झरनों में जाते हैं और फिर छोटी नदियों में और बड़ी नदियों में और अंत में समुद्र में चले जाते हैं। तो, हम ऐसा करने जा रहे हैं, यह इन व्यक्तिगत स्तोत्रों से शुरू होता है और वे एकत्रित हो जाते हैं और वे पुस्तकों में एकत्रित हो जाते हैं जब तक कि अंततः हमारे पास कैनन नहीं होता।

इसलिए, हम इस प्रक्रिया को देखेंगे और उन चरणों को देखेंगे जिनके द्वारा पुस्तक तैयार हुई। निस्संदेह, पहला चरण व्यक्तिगत गीत या व्यक्तिगत भजन था। जैसा कि हमने देखा, कुछ वास्तव में मंदिर के लिए लिखे गए थे, अर्थात् स्तुति के स्तोत्र।

भजन संभवतः मंदिर के लिए रचे गए थे। संपूर्ण बलिदान के साथ कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा के गीत। तो, आपके पास स्तुति के बलिदान के साथ-साथ स्तुति का शब्द भी था।

वे मूल रूप से मंदिर के लिए थे, लेकिन डेविड का विलाप विभिन्न अनुभवों में मंदिर से दूर रचा गया लगता था, खासकर जब यह सात भजन थे जब उसका शाऊल के साथ मुकाबला हुआ था और वह जंगल में था। इसलिए, उनके पास विशेष रूप से मंदिर नहीं था, लेकिन क्योंकि वह एक

करिश्माई व्यक्ति थे और उन्होंने लिखा था, जाहिर तौर पर किसी ने इन कविताओं को लिखा था जो उन्होंने लिखी थीं। इससे सभी स्तोत्रों के लिए दूसरा चरण शुरू हुआ जिसे मुख्य संगीतकार को सौंप दिया जाता है।

इसलिए शोकगीत भी मुख्य संगीतकारों को सौंपे जाते हैं। मुख्य संगीतकार ने इसे लोकतंत्रीकरण के लिए अपनाया। हो सकता है कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से और राजा के लिए डेविड का उल्लेख किया हो, लेकिन वे लोकतांत्रिक भी हो रहे थे ताकि सभी लोग मंदिर में भजन गा सकें, या कम से कम पुजारी मंदिर में भजन गा सकें, या राजा गा सकें। मंदिर में भजन।

संभवतः, जैसा कि हमने कहा, उनमें से कई स्वर-विरोधी थे। तो, आपने पुजारी को गाते हुए देखा, आपने लोगों को गाते हुए देखा, आपके पास राजा को गाते हुए देखा गया, और शायद एक पुजारी या भविष्यवक्ता ने भगवान का प्रतिनिधित्व किया और भजनों के भीतर भगवान की आवाज दी। तो, आपके पास पहला चरण है व्यक्तिगत भजन या तो मंदिर के लिए या मंदिर से दूर, विलाप।

फिर आपके पास दूसरा चरण है जहां अब उन्हें अपनाया जाता है और मंदिर में उपयोग किया जाता है। दूसरा विवरण पृष्ठ 337 के शीर्ष पर है, जहां मैं कुछ कुमरान स्कॉल के बारे में बात करता हूं और यह भजन की पुस्तक के परिचय के लिए थोड़ा अधिक विस्तृत है। मैं उसे छोड़ दूंगा।

तीसरा चरण यह प्रतीत होता है कि ये अब प्रतीत होते हैं, तीसरा चरण यह प्रतीत होता है कि इन्हें समूहों में एकत्र किया गया था। इस अनुभाग में, मैं चर्चा कर रहा हूं कि वे किस प्रकार के समूह एकत्र किए गए हैं। तो, मैं इस बारे में बात करता हूं कि उन्हें लेखक या शैली द्वारा कैसे एकत्र किया गया था, और फिर भजनों में कठिनाइयों में से एक को एलोहिस्टिक स्तोत्र के रूप में जाना जाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हें एलोहिम नाम के संदर्भ में किसी तरह एकत्रित किया गया है। मैं उस पर कुछ विस्तार से विचार करूंगा। अन्य तकनीकें भी थीं जो विषयगत समूहीकरण और समूहीकरण की अन्य तकनीकें थीं।

मैं उनमें से कुछ अन्य तकनीकों को देखता हूं। मैं वास्तव में काफी हद तक ब्रेवेट चिल्ड्स पर लिखे गए जेर्गर्ड विल्सन के येल डॉक्टरेट शोध प्रबंध पर निर्भर हूं, जो साल्टर के संपादन से संबंधित था। आपकी ग्रंथ सूची में वह संदर्भ है।

चौथा चरण यह है कि उन्हें एकत्र किया जाएगा। फिर हम उन्हें समूहों में बाँट देते हैं और प्रतीत होता है कि लगभग अंतिम चरण में, उन्हें पाँच समूहों, पाँच पुस्तकों में एकत्रित किया जाता है, जैसा कि मैंने कहा। और हम उस पर गौर करेंगे।

और अंत में, हमारे पास कैनन ही है, मैसोरेटिक, जो वास्तव में पुराने टेस्टामेंट और फिर पवित्र ग्रंथ के कैनन में पुस्तक बन जाती है। खैर, आइए इसे और अधिक विस्तार से देखें, जैसा कि हम देखते हैं कि यह तीसरे चरण में एक साथ कैसे आया कि उन्हें समूहों में कैसे एकत्र किया गया।

विल्सन बताते हैं कि एकत्रित करने की प्रक्रिया कीलाकार समानता से अनुमान लगाने के लिए ईसा पूर्व 2334 से 2279 के बीच ईसा पूर्व, यदि पहले नहीं तो, शुरू हुई थी।

तो, मेसोपोटामिया से साक्ष्य यह है कि यह समूह साल्टर के गठन के इतिहास में बहुत पहले हुआ था। उन्हें समूहीकृत करने का एक तरीका लेखकत्व के माध्यम से है। क्रॉनिकलर में दो लेखकों का उल्लेख है।

वह डेविड के बारे में बात करता है और वह भजन के दो प्रमुख लेखकों के रूप में आसफ के बारे में बात करता है। बहुत ही रोचक। वह वहां कहता है, वह इस बारे में बात करता है कि वे कैसे डेविड और आसाप के हाथों में थे।

और इसलिए, यह सवाल उठाता है कि इसका क्या मतलब है कि यह डेविड और आसाप के हाथों में था? और शायद यह काइरोनॉमी का जिक्र कर रहा है जहां आपने संगीत को अपने हाथों से निर्देशित किया है। तो, आपके पास हाथ के संकेत होंगे कि आपको इसे कैसे गाना चाहिए। तो यह इस तरह से इसे व्यक्त करता है, डेविड और आसाप के हाथों के तहत।

तो यहाँ आपके पास है, अधिकांश भजन डेविड द्वारा हैं और आपके पास भजन 1 और 2, 3 से 41 में परिचय के बाद पूरी पहली पुस्तक बहुत अच्छी तरह से डेविड द्वारा है। उस संग्रह में दो गुमनाम भजन हैं। वे 10 और 33 हैं।

10 कोई विशेष समस्या नहीं है क्योंकि यह वास्तव में मूल रूप से भजन 9 का एक हिस्सा था। मूल रूप से भजन 9 और 10 एक ही भजन थे। भजन 33 थोड़ा अधिक समस्याग्रस्त है क्योंकि इसमें लेखकत्व का संकेत दिए बिना एक अनाथ भजन है। डेविड, द डेविड द्वारा लिखे गए भजन, 51 से 65 तक की पुस्तक ॥ में भी पाए जाते हैं।

और फिर, 68 से 70 में। और फिर आपके पास 72 में है जो पुस्तक ॥ को बंद करता है, आपके पास यह सोलोमन द्वारा है। और फिर भी ऐसा लगता है कि वह भजन डेविडिक संग्रह के साथ हवा में है।

और यहीं पर हमारे पास यह अंतिम संपादकीय सूचना है, जेसी के बेटे डेविड की प्रार्थनाएँ समाप्त होती हैं। हमारे पास पुस्तक III और IV में डेविड के और भी भजन हैं। और मैं इसे फुटनोट 477 में नोट करता हूँ।

लेकिन दूसरे शब्दों में, यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि भजनों को एकत्र करने का एक तरीका लेखकत्व है। और मुख्य संग्रहों में से एक वह है जो डेविड का है या डेविड का है। एक और संग्रह है जो कोराच के पुत्रों का है।

यह पुस्तक ॥ और III में पाया जाता है। और इसलिए, पुस्तक ॥ में जो पुस्तक खोलती है, भजन 42 और 43, जैसा कि मैंने कहा, मूल रूप से एक भजन था और भजन 42, 43 से 49 कोराच के पुत्रों द्वारा लिखे गए हैं। जब हम एलोहिस्टिक स्तोत्र के बारे में बात करेंगे तो हम उस पर वापस आएंगे।

इसके अलावा, पुस्तक ॥ में कोराच के पुत्रों द्वारा, इस बार भजन 84, 85, 87, और 88 हैं। आसाप के भजन भजन 50, 73 से 83 हैं। और भजन में सबसे पुराना भजन भजन 90 है, जो कि है मूसा, भगवान का आदमी।

तो, सामग्री एकत्र करने का एक तरीका लेखक के माध्यम से है। इन्हें उनकी शैली के माध्यम से भी एकत्रित किया जाता है। तो, कुछ संग्रह सुश्री मूर द्वारा भजन के रूप में एक साथ रखे गए हैं।

मैं आपको वे छोटे संग्रह देता हूँ, बल्कि 3 से 6, 19 से 24, इत्यादि। हम पहले ही भजन 56 से 60 में मिश्रित को देख चुके हैं। फिर कुछ को विवेकपूर्ण या कुशल बनाने के लिए मास्किल कहा जाता है।

बिल्कुल इनमें से कुछ सुपरस्क्रिप्ट, हम ठीक से नहीं जानते कि उनका अनुवाद कैसे किया जाए। लेकिन यहां आपके पास मास्किल 42, 43 से 46, 52 से 55 का संग्रह है। लेकिन ये लेखकीय संग्रहों के भीतर प्रतीत होने वाले छोटे संग्रह हैं।

एक तीसरा समूह जो काफी समस्याग्रस्त है वह तथाकथित एलोहिस्टिक स्तोत्र है। एलोहिस्टिक स्तोत्र भजन 42 से 83 तक फैला हुआ है। इसे एलोहिस्टिक स्तोत्र कहा जाता है क्योंकि इन 42 स्तोत्रों के अलावा अन्य स्तोत्रों में, भगवान का प्राथमिक नाम उसका नाम है जिसका उपयोग इज़राइल के भगवान, अर्थात् यहोवा या मैं के संदर्भ में किया जाता है। एएम या आमतौर पर बड़े अक्षरों में भगवान का अनुवाद किया जाता है।

यह ईश्वर को संदर्भित करने का प्राथमिक तरीका है। वह इस्राएल का परमेश्वर है। तो जैसे मर्दुक बेबीलोन का व्यक्तिगत ईश्वर था, यहोवा इस्राएल का व्यक्तिगत ईश्वर है क्योंकि उसने राष्ट्र का गठन किया था।

उन्होंने राष्ट्र को अपने परिवार के रूप में अपनाया। वह उनका पिता बन गया और वे उनके पुत्र बन गये। एक और कल्पना, वह उनके लिए एक पति के रूप में बन गया और वे उसके लिए एक दुल्हन के रूप में बन गईं।

तो, आपके पास इज़राइल के उनके अनुबंध-पालन करने वाले भगवान के साथ संबंध की ये दो अलग-अलग छवियां हैं, जिसका नाम AM है, और जिनके नाम के महत्व पर हमने एक अन्य व्याख्यान में चर्चा की है। लेकिन एलोहिस्टिक स्तोत्र में, प्राथमिक नाम एलोहीम है। यह ईश्वर को उसकी श्रेष्ठता में संदर्भित करता है।

यह केवल ईश्वर को संदर्भित करता है, एक ईश्वर जो समग्र है। तो, आप अपनी माँ का उल्लेख कर सकते हैं, आप उन्हें माँ कह सकते हैं। कोई दूसरा नहीं है, या आप अपनी माँ का नाम रख सकते हैं।

तो, उसी तरह, आप ईश्वर को ईश्वर के रूप में संदर्भित कर सकते हैं कि वह कौन है, या आप उसके नाम यहोवा का उपयोग कर सकते हैं कि वह शाश्वत है और इज़राइल के साथ अपने रिश्ते के माध्यम से खुद को ज्ञात कराता है। यहां मैं आपको भजन 1 से 41 तक के आँकड़े देता हूँ, और

याद रखें कि एलोहिस्टिक स्तोत्र 42 से 83 तक है। भजन 1 से 41 और 84 से 150 में, इज़राइल के साथ उसके रिश्ते में भगवान का व्यक्तिगत नाम, यहोवा, जिसका अर्थ है मैं हूँ, 584 बार होता है।

लेकिन एलोहिस्टिक स्तोत्र में, उसका नाम आता है कि, ओह, उन स्तोत्रों में, । AM नाम 584 बार आता है और एलोहीम, बस भगवान, शीर्षक 94 बार आता है। लेकिन एलोहिस्टिक स्तोत्र में, । AM नाम 45 बार और एलोहिम नाम 210 बार आता है। तो, आपके पास दिव्य नाम की एक बहुत ही विशिष्ट एकाग्रता या परिवर्तन है।

और इसके अलावा, वैकल्पिक नाम का उपयोग अधिकतर समानता में होता है। दूसरे शब्दों में, यहोवा के समानांतर एलोहीम होगा। इन एलोहिस्टिक स्तोत्र के बाहर की अन्य पुस्तकों में, यहोवा सामान्यतः ए पद्य सेट में है और एलोहीम बी पद्य सेट में है।

लेकिन एलोहिस्टिक स्तोत्र में, एलोहीम ए पद्य सेट में है और यहोवा बी पद्य सेट में है। इसलिए इन 42 पुस्तकों में एक बहुत ही विशिष्ट भूमिका है। वास्तव में, ऐसे संक्षिप्त स्तोत्र हैं जो एलोहिस्टिक स्तोत्र के बाहर और एलोहिस्टिक स्तोत्र के भीतर पाए जाते हैं।

यह सचित्र है। मैं आपको भजन 14 और भजन 53 देता हूँ। आप देख सकते हैं कि कैसे भजन 53 में भगवान या यहोवा के बजाय एलोहिम का उपयोग किया गया है।

यहाँ भजन है। यह डेविड द्वारा है। मूर्ख अपने मन में कहता है, कोई परमेश्वर नहीं है।

वे भ्रष्ट हैं। उनके कर्म घृणित हैं। भलाई करनेवाला कोई नहीं।

मुझे लगता है कि आप इसे रोमियों 3 से पहचान सकते हैं। यहीं पर पॉल यह दिखाने के लिए भजन का उपयोग करता है कि सभी पापी हैं, कोई भी अच्छा काम करने वाला नहीं है। और इसलिए, वह भजन के माध्यम से सिद्धांत सिखा रहा है। ध्यान दें कि यह यहाँ ईश्वर को कैसे संदर्भित करता है।

वह भजन का उपयोग करता है, यह भजन 14 है, प्रभु, अर्थात् यहोवा, स्वर्ग से सारी मानवजाति पर दृष्टि करता है कि क्या कोई समझनेवाला, कोई परमेश्वर को खोजनेवाला है। ध्यान दें कि भगवान ए पद्य सेट में कैसे हैं, भगवान बी पद्य सेट में कैसे हैं। सबने मुंह मोड़ लिया है।

सब भ्रष्ट हो गए हैं। भलाई करनेवाला कोई नहीं, एक भी नहीं। क्या ये सभी दुष्ट लोग कुछ नहीं जानते? वे मेरी प्रजा को ऐसे खा जाते हैं मानो रोटी खा रहे हों।

वे कभी भी भगवान का नाम नहीं लेते। परन्तु वहां वे भय से अभिभूत हैं, क्योंकि परमेश्वर धर्मियों की संगति में मौजूद है। हे कुकर्म करनेवालों, तुम कंगालोंकी युक्ति निष्फल करते हो, परन्तु उचित नाम ध्यान रखो, यहोवा उनका शरणस्थान है।

इस्राएल के लिए सारा उद्धार सिय्योन से आएगा जब प्रभु किले, अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेगा। याकूब आनन्दित हो, और इस्राएल आनन्दित हो। अब यहाँ एलोहिस्टिक स्तोत्र में स्तोत्र है।

मूर्ख अपने मन में कहता है, यह अब दाऊद का पुरुषत्व है, मूर्ख अपने मन में कहता है, कोई परमेश्वर नहीं है। वे भ्रष्ट हैं और उनके तरीके नीचे हैं। भलाई करनेवाला कोई नहीं।

अब ध्यान दें, जबकि भजन 14 में कहा गया है, प्रभु स्वर्ग से नीचे देखते हैं। यहाँ हम पढ़ते हैं, परमेश्वर स्वर्ग से सारी मानवजाति पर दृष्टि करता है कि क्या कोई समझनेवाला, कोई परमेश्वर की खोज करनेवाला है। सबने मुंह मोड़ लिया है।

सब भ्रष्ट हो गए हैं। भलाई करनेवाला कोई नहीं, एक भी नहीं। क्या ये सभी दुष्ट लोग कुछ नहीं जानते? वे मेरी प्रजा को ऐसे खा जाते हैं मानो रोटी खा रहे हों।

वे कभी भगवान को नहीं पुकारते। जबकि भजन 14 में कहा गया है, वे कभी प्रभु को नहीं पुकारते। लेकिन वहां वे भय से अभिभूत हैं जहां डरने की कोई बात नहीं थी।

परमेश्वर ने उन लोगों की हड्डियाँ बिखेर दीं जिन्होंने तुम पर आक्रमण किया था। तुमने उन्हें लज्जित किया क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ जाना। इस्राएल के लिए सारा उद्धार सिय्योन से आएगा जब परमेश्वर अपने लोगों का भाग्य बहाल करेगा।

ध्यान दें कि भजन 14 के श्लोक सात में, इस्राएल के लिए सारी मुक्ति सिय्योन से आएगी जब प्रभु अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेगा। परन्तु याकूब आनन्द करे, और इस्राएल आनन्द करे। तो, मुझे लगता है कि यह बहुत स्पष्ट है।

इज़राइल के व्यक्तिगत नाम से ईश्वर के लिए अधिक अमूर्त सामान्य शब्द में नाम का एक बहुत ही सचेत परिवर्तन है, जो सभी चीजों का उत्कृष्ट निर्माता है। मैं मान रहा हूँ कि वेलहाउज़ेन में, यह सब जेईपी डी जैसी ई चीजें हैं। नहीं, नहीं, इसका उससे कोई संबंध नहीं है। नहीं, ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि यह केवल उसी तरह से है जैसे पेंटाटेच, जे, ई, और डी केवल पेंटाटेच में हैं, या वॉन रेड जैसे कुछ लोगों के साथ, इसमें हेक्साटेच भी शामिल है। वह इसमें जोशुआ को भी शामिल करता है। तो, नहीं, इसका उससे कोई संबंध नहीं है।

अब, जब हम इस एलोहिस्टिक स्तोत्र को देखते हैं, तो कोई देख सकता है कि इसमें 51 से 72 तक डेविडिक कोर है और यह दो लेविटिकल संग्रहों से घिरा हुआ है।

सबसे पहले, कोरहियों द्वारा, जैसा कि हमने कहा, कोरह के पुत्रों द्वारा, यानी 42 से 49 तक। फिर आपके पास आसाप द्वारा 73 से 83 तक के असाफिक भजन हैं। तो, ऐसा लगता है, यह डेविडिक कोर के आसपास है इसके दोनों ओर दो लेवीय गायक मंडलियाँ हैं।

लेकिन हमारे लिए दिलचस्पी की बात यह है कि 42 भजन हैं और वे भजन 42 से शुरू होते हैं। तो, संख्या 42 से क्या पता चलता है? हमारे पास क्यों है, वे भजन 42 से शुरू होते हैं और हमारे पास 42 भजन हैं। खैर, संख्याओं का प्रतीकात्मक महत्व है।

जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, और मैं यहाँ दूसरों से सहमत हूँ, संख्या 42 का तात्पर्य समयपूर्व निर्णय से है। उदाहरण के लिए, आपके पास यह है कि इसका उल्लेख क्यों किया गया है कि जब एलीशा ने बच्चों पर भालूओं को बुलाया, तो बेथेल के लड़के जो उसका मजाक उड़ा रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे, 42 लड़के मारे गए। यह 42 है।

जब येहू ने सामरिया की ओर आने वाले यहूदियों को मार डाला, तो उस स्थिति में उसने 42 यहूदियों को मार डाला। तो, कविता के प्राचीन निकट पूर्वी संग्रहों में संख्या 42 प्रमुखता से अंकित है। इस संग्रह में 42 स्तोत्र हैं।

इसकी शुरुआत भजन 42 से होती है और पुराने नियम में अन्यत्र, अंक 42 का उपयोग निर्णय या अकाल मृत्यु के संदर्भ में किया जाता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, न्यायियों 12.6 में, जहाँ यिप्तह ने जॉर्डन के घाट पर एप्रैमियों से बदला लिया, वहाँ 42,000 एप्रैमी थे। लेकिन फिर, उन्हें 42 नंबर के साथ मौत की सज़ा दी गई।

मैंने पहले ही 2 किंग्स 2.24 में बच्चों का उल्लेख किया है। और फिर 2 राजा 10.14 में अहज्याह के रिश्तेदारों के साथ। और इसका रहस्योद्घाटन के दृश्य पर कुछ असर हो सकता है जहाँ जानवर 42 महीनों तक शासन करता है जिसके बाद वह नष्ट हो जाता है, उसके बाद सात वर्षों के मध्य में। किसी भी मामले में, मुझे लगता है कि हम यह मामला बना सकते हैं कि 42 एक समयपूर्व निर्णय है। तो यह 42 क्यों है? और मुझे लगता है कि यह सही है, संभवतः बर्नेट के साथ, कि मंदिर के विनाश का विलाप हो सकता है, कि यह उसे प्रतिबिंबित कर सकता है।

इसमें 587 में मंदिर के विनाश पर शोक व्यक्त करने के लिए कहा गया है। और फिर इस एलोहिस्टिक कोष में, लेविटिकल कोष में न केवल विलाप के भजन हैं, बल्कि इसके परे नवीकरण की आशा व्यक्त करने के लिए भी है। दोनों राजनीतिक संग्रह विलाप से शुरू होते हैं, या तो मंदिर से अनुपस्थिति के बारे में, भजन 42, तुम मेरी आत्मा पर क्यों थोपे जाते हो? हमने उस भजन को देखा।

वह मंदिर से दूर है या भगवान की इच्छा नहीं पा रहा है या या तो मंदिर से अनुपस्थिति है या भगवान की कृपा से अनुपस्थित है, जैसा कि हमने भजन 73 में देखा। भजन 73, भजन की तीसरी पुस्तक शुरू करता है। तो दूसरी किताब का पहला भजन मंदिर की अनुपस्थिति के बारे में है।

और भजन 73 का पहला भजन, पुस्तक तीन का, भजन 73 इस्राएल के लिए परमेश्वर को दर्शाता है। लेकिन मेरे लिए, जब मैंने दुष्टों की समृद्धि देखी तो मेरे पैर लगभग फिसल गए थे। मैं दिन भर कष्ट सहता रहा हूँ।

बदले में दोनों ही मामलों में हार के सांप्रदायिक विलाप का सिलसिला चलता है। हमने भजन 44 को देखा, उदाहरण के लिए, हमने वध के लिए भेड़ों के रूप में, और मंदिर के विनाश के बारे में

बताया, जहां वे अपनी कुल्हाड़ियों के साथ आते हैं और इसे काटते हैं और इसे नष्ट कर देते हैं। यह भजन 74 है।

आसाप संग्रह, जो कि 73 से 83 तक है, में अन्य सांप्रदायिक विलाप शामिल हैं। मुझे यकीन नहीं है कि यहां क्या हुआ, मुझे लगता है कि 79, 80, और 83 में ऐसा होना चाहिए। भजन 83 का समापन ईश्वर से राष्ट्रीय शत्रुओं से निपटने और ईश्वर की विश्व-व्यापी संप्रभुता पर जोर देने की प्रार्थना के साथ होता है।

यह मैं जोएल बर्नेट के अध्ययन, एलोहिम के लिए 42 गाने, 2006 में जेएसओटी में एलोहिस्टिक साल्टर को आकार देने में एक आयोजन सिद्धांत से ले रहा हूं। फिर से, पृष्ठ 310 पर एलोहिस्टिक साल्टर को देखते हुए, हम यहां ध्यान देते हैं, यहां भी है सिथ्योन के गीत जो आशा देते हैं। तो, इस विनाश के बीच में, उसी संग्रह में, हमारे पास सिथ्योन के गीत हैं, जो लोगों को मृत्यु के बीच में आशा दे रहे हैं।

इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि भजन 84 से 89 तक, वे एलोहिस्टिक स्तोत्र का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन वे पुस्तक III का हिस्सा हैं। वे वास्तव में इसका एक परिशिष्ट हैं। यह उस संग्रह में है जिसमें हमारे पास स्तोत्र का सबसे गहरा स्तोत्र है, जो स्तोत्र 88 है।

भजन 89 में, हमें दाऊद के घराने की विफलता का पता चलता है कि उसने दाऊद को वाचा दी, लेकिन भजनहार ने जैसा कहा है, दाऊद का मुकुट धूल में लोट रहा है। तो, डेविडिक वाचा की विफलता पर भजन 89 में सबसे अधिक दुख व्यक्त किया गया है, लेकिन भजन 84 और 87 में सिथ्योन के गीत भी हैं। इसलिए यह मृत्यु और आशा का मिश्रण प्रतीत होता है।

ऐसा लगता है कि यह मंदिर का विनाश, सांप्रदायिक विलाप, दुष्टों की समृद्धि, मैं निर्वासन में हूं, सेना हार गई है, इन सभी भजनों का मिश्रण है। लेकिन साथ ही, हम सिथ्योन के इन गीतों को इसमें मिलाते हैं ताकि उन्हें यह आशा बहाल करनी पड़े कि सिथ्योन ईश्वर का शहर है और इसे बहाल किया जाएगा। एलोहिस्टिक स्तोत्र, जैसा कि आप देख सकते हैं, कुछ हद तक समस्याग्रस्त है।

मेरे विचार से, इसे समझने में यह सबसे अच्छा है। वर्षों जब मैंने स्तोत्र की पुस्तक पढ़ाई, मैंने बस इतना कहा, मुझे यह समझ में नहीं आया। लेकिन मुझे लगता है कि मैं इस बर्नेट अध्ययन से सहमत होने लगा हूं जो शायद प्रतिबिंबित हो रहा है।

बहुत सारे अंधेरे भजन हैं, जिनमें मंदिर का विनाश और 74, 79, इत्यादि शामिल हैं। लेकिन साथ ही, हमारे पास सिथ्योन के गीत भी हैं जो आशा देते हैं। इस समय मैं इसके साथ इतना ही सर्वोत्तम कर सकता हूँ।

फिर मैं यह कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ कि मृत्यु और जीवन का संयोजन इसे यरूशलेम और उसके विनाश के बाद मंदिर के लिए एक युगांतकारी मसीहाई आशा देता है। तो, मुझे लगता है कि किताब इसी तरह काम करती है। मैं कुछ छोटे भविष्यवक्ताओं को पढ़ रहा हूँ

और ऐसा लगता है कि जिनमें निर्णय पर वास्तविक जोर दिया गया है वे भी हमेशा आशा जगाते हैं।

यह एक प्रकार का बाइबिल पैटर्न है, है ना? आप कभी भी निर्णय के अलावा किसी और चीज़ के बारे में बात नहीं करते हैं, क्योंकि निर्णय के अंत में हमेशा आशा होती है। यह सही है। यह बिल्कुल सही है, यह सभी भविष्यवाणी सामग्री के बारे में सच है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, मीका में, जिससे मैं अधिक परिचित हूँ। मैं इसी के बारे में सोच रहा था। क्षमा? यही वह था जिसके बारे में मैं सोच रहा था।

ठीक है। खैर, मीका में, आपको न्याय के दैवज्ञों की ये पूरी श्रृंखला मिलती है। दरअसल, मैं किताब को तीन हिस्सों में बंटा हुआ देखता हूँ।

पहला खंड एक से दो अध्याय है, आइए देखें, वास्तव में यह एक से दो तक है। इसकी शुरुआत हीरो इज़राइल से होती है और आपके पास आरोपों और निर्णयों की एक पूरी श्रृंखला होती है। और फिर आपके पास अध्याय 12 के अंत में एक आशा है, जहां आपके पास प्रभु सियोन से बाहर निकलेंगे और आपके पास अवशेष होंगे।

फिर आपको दूसरा, अध्याय तीन, हीरो इज़राइल मिलता है। और हमें नेतृत्व के विरुद्ध, शासकों द्वारा याजकों के विरुद्ध, भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध, और अंततः यरूशलेम के विनाश के तीन दैवज्ञ मिलते हैं। लेकिन फिर आपको चार और पांच मिलते हैं, जो उन अवशेषों से भर जाता है जो बहाल होने वाले हैं और वे एक शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएंगे।

और यहीं हम पहुंचते हैं, परन्तु हे बेतलेहेम, यद्यपि तू यहूदा के हजारों लोगों में से छोटा है, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएल का शासक होगा, जो प्राचीनकाल से, सर्वदा से है। और यही बात तीसरे खंड, अध्याय छह, सात से आठ में भी होती है। यह सब आरोप और निर्णय है, लेकिन अंत में यह जीत के एक समग्र गीत के साथ समाप्त होता है।

तो बिल्कुल सही। एक ही बात है। मेरा मतलब है, यह उपदेश देने का भी एक साफ-सुथरा पैटर्न है।

लेकिन भले ही आप किसी निर्णयात्मक मार्ग के माध्यम से उपदेश दे रहे हों, आशा व्यक्त की जानी चाहिए। सही। हाँ।

क्योंकि यदि कोई मुक्ति नहीं है, तो भजनहार कहेगा, कौन खड़ा रह सकता है, कौन सह सकता है? यदि यह सब सिर्फ निर्णय है, तो आप इसे अपने हाथों में सौंप दें। हां इसी तरह। हमें कोई उम्मीद नहीं है।

सही। हाँ। यह बहुत, बहुत अच्छा है।

समूहीकरण का दूसरा तरीका. इसलिए, मैंने लेखक के आधार पर समूहीकरण, शैली के आधार पर समूहीकरण, यहोवा के विपरीत एलोहीम के उपयोग के आधार पर समूहीकरण के बारे में बात की है। दूसरा विषयगत समूहन द्वारा है।

हिब्रू में एक तरीका है, सेमिटिक सोच यह है कि वे ऐसी सामग्री को एक साथ रखते हैं जो कुछ हद तक सजातीय होती है। मुझे लगता है कि आपको हमारी वर्णमाला में सजातीय सामग्री के समूहन के बारे में कुछ जानकारी मिल जाएगी, उदाहरण के लिए, जहां हमारी अंग्रेजी वर्णमाला वास्तव में सेमिटिक वर्णमाला पर आधारित है। तो, उदाहरण के लिए, हमारे पास HAJ होगा।

खैर, हाईज्क।। शब्द हिब्रू शब्द योड से आया है। और शब्द, K हिब्रू शब्द, कैप्फ़ से आया है।

योड, जो ग्रीक वर्णमाला के माध्यम से हमारे। में आता है, हाथ को संदर्भित करता है। और हिब्रू में, इसका तात्पर्य कोहनी से उंगलियों तक है। वह। है। K हिब्रू शब्द है, कैप्फ़।

और वह हाथ की हथेली को संदर्भित करता है और दोनों को एक साथ रखा जाता है। उदाहरण के लिए, जब आप एम और एन पर पहुंचते हैं, तो हिब्रू शब्द वह है जिससे एम आता है, हिब्रू शब्द मयिम है, जिसका अर्थ है पानी। और फिर नन का मतलब मछली है।

क्यू और आर, क्यू हिब्रू शब्द क्यूओफ़ से आया है, जिसका अर्थ है सिर का पिछला भाग जहां बाल होते हैं। और आर रेश से आता है, जो सिर के सामने को संदर्भित करता है। और इसलिए, आप देख सकते हैं कि यहां विचारों का एक समूह है।

और ऐसा प्रतीत होता है कि रब्बियों द्वारा सामग्री एकत्रित की जाती है। स्तोत्रों के संग्रहकर्ता किसी न किसी प्रकार से एक सजातीय सामग्री भी एकत्र कर रहे हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, आप भजन 3 से 6 में सुबह की प्रार्थना और शाम की प्रार्थना का विकल्प देख सकते हैं। इसलिए, हमने भजन 3 को देखा, और मैं सुबह जाग गया।

भजन 4, मैं रात को सोने जाता हूँ। भजन 4, वह एक संतरी के रूप में इंतजार कर रहा है जो सुबह भगवान के न्याय लाने की प्रतीक्षा कर रहा है। भजन 6, वह रात में अपने बिस्तर को आंसुओं से भर देता है।

तो तुम सुबह, रात, सुबह, रात जाओ। और शायद यह सुबह के बलिदान और शाम के बलिदान के लिए था। यह पूरी तरह से अटकलें हैं।

लेकिन फिर, यह सामग्री को समूहीकृत करने का एक तरीका है। तो विषयगत से आपका तात्पर्य केवल जो पढ़ाया जा रहा है उसके अर्थ के संदर्भ में विषयगत नहीं है, बल्कि रूपक, साझा रूपक, चित्र भी हैं। हाँ।

मैं इसे बहुत व्यापक रूप से उपयोग कर रहा हूँ। हाँ। ठीक है।

हाँ। ध्यान दें कि भजन 7, 8 और 9 एक साथ कैसे चलते हैं। हो सकता है आप उधर मुड़ना चाहें।

भजन 8 हम ने देखा, हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही उत्तम है। लेकिन इसके पहले वाले भजन और उसके बाद वाले भजन को देखें। यहाँ भजन 7 का अंत है। हम भजन 7.17 में पढ़ते हैं, मैं यहोवा की धार्मिकता के कारण उसका धन्यवाद करूँगा।

मैं परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा। वह 7 का अंतिम पद है। भजन 8 शुरू होता है, हे प्रभु, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर कितना उत्तम है। और फिर वह एक समावेश है और पद 8 के अंत में दोहराया गया है, हे प्रभु, हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर कितना प्रतापी है।

और वह हमें भजन 9 की ओर ले जाता है। हे प्रभु, मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से तेरा धन्यवाद करूँगा। मैं तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँगा। मैं तुम्हारे कारण प्रसन्न और आनन्दित होऊँगा।

हे परमप्रधान, मैं आपके नाम का गुणगान गाऊँगा, जो 7.17 के समान है। तो, ऐसा लगता है कि ये वे तरीके हैं जिनसे सामग्री को एक साथ लाया जा रहा है। हमने पहले ही भजन 93 से 99 तक देख लिया है, जिन्हें सिंहासनारोहण भजन कहा जाता है क्योंकि वे ईश्वर के शासनकाल और सृष्टि की स्थापना में उनकी जीत का जिक्र कर रहे हैं। वे उसके आने और न्याय के बारे में भी बात करते हैं।

ऐसे अन्य तरीके और तकनीकें हैं जिनके द्वारा उन्हें एक साथ रखा जाता है। उनमें चिपपेट में समान या समान का युग्म है, अर्थात् अंत भी एक ही है। तो, भजन 103 और भजन 104, इसकी शुरुआत कैसे होती है।

और इसलिए, भजन 103 और 104 दोनों समान वाक्यांशों के साथ शुरू और समाप्त होते हैं, उदाहरण के लिए, भगवान को आशीर्वाद दें या हे मेरी आत्मा को आशीर्वाद दें। अन्य तकनीकों द्वारा एक और तरीका, जैसा कि मैंने इसे यहां रखा है, एक और तरीका अद्वितीय शीर्षक है। और प्रसिद्ध संग्रहों में से एक है आरोहण का गीत, भजन 120 से 134 तक, क्योंकि वे सभी अल्मालॉट से शुरू होते हैं, जिसका अर्थ है आरोहण।

इसका मतलब क्या है, इस पर कुछ बहस है, लेकिन आम सहमति यह है कि वे तीर्थयात्रा के लिए लिखे गए थे, जब आप यरूशलेम की तीर्थयात्रा करते थे और इज़राइल साल में तीन बार वहां जाता था। वे मुहावरे द्वारा भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। और हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे भजन 1 और 2 को एक साथ लाया गया है।

भजन 3 और 4 को एक साथ लाया गया है क्योंकि मैंने उल्लेख किया है कि भजन 1 धन्य के साथ शुरू होता है, भजन 2 धन्य के साथ समाप्त होता है। भजन 1 में, आप टोरा में ध्यान करते हैं। भजन 2 क़ानून को संदर्भित करता है।

भजन 1 का तात्पर्य ध्यान करना और 2:1 का तात्पर्य प्रार्थना करना इत्यादि से है। हम पहले ही उस पर चर्चा कर चुके हैं। भजन 3 और 4 एक साथ लाते हैं क्योंकि वे दोनों कहते हैं, 3:6 और 4:8 में मैं लेटता हूँ और सोता हूँ। और इसलिए, ऐसा लगता है जैसे ये कैचवर्ड या वाक्यांश या शब्द

जिन्हें कॉन्सटेनेशन के रूप में जाना जाता है, कॉन्सटेनेटॉन कॉन्सटेनेशन आपकी सामग्री को समूहीकृत करने का एक और तरीका है।

एक अन्य समूह हल्लेलुजाह भजन द्वारा है। और मैं आपको यहां समूह देता हूँ। हल्लेलुजाह स्तोत्र के चार समूह हैं, जो सभी स्तोत्र खंडों के समापन को चिह्नित करते हैं।

तो, 104 और 1.06 पुस्तक 2 को समाप्त करते हैं, मेरा मतलब है, मुझे क्षमा करें, पुस्तक 4। भजन 146 से 150 पुस्तक 5 को समाप्त करते हैं। और ऐसे लोग भी हैं जो तर्क देंगे कि एक इकाई है जो 117 पर समाप्त होती है और दूसरी वह, ठीक है, 120 से 134 तक के आरोहण स्तोत्रों के बाद, आपके पास 135 हैं। खैर, किसी भी कीमत पर, तो हम इस बारे में बात कर रहे थे कि स्तोत्र एक साथ कैसे आए। और हमने कहा कि पहला चरण या तो मंदिर के लिए या मंदिर से दूर व्यक्तिगत भजन था। लेकिन अंततः, मुझे लगता है, उन सभी को लगभग तुरंत ही संगीत निर्देशक को सौंप दिया गया।

वे सभी मंदिर के लिए थे। और ऐसा लगता है कि लेवी का घराना, आसाप जैसे अलग-अलग घराने, ठीक है, वह लेवी नहीं है, वह लेवी का वंशज है, लेकिन कोराथियों वगैरह का है। वे एक विशिष्ट घर हैं और वे गायक हैं जो इस सामग्री को एक साथ लाएंगे।

और वे इसे उन तरीकों से समूहित कर रहे थे जैसे मैं इसका सुझाव देता रहा हूँ। और इसका इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि वे कैसे लिखे गए थे। मेरा मतलब है, वे उन्हें एक साथ रखने के लिए नहीं लिख रहे थे।

ऐसे ही लिखे गए थे। हाँ, मुझे लगता है कि यह नीतिवचन के समान है कि वे सभी व्यक्तिगत थे, लेकिन उन्हें कुछ प्रकार के सहयोग द्वारा एक साथ लाया गया था। मुझे लगता है कि जब हम वास्तव में एसोसिएशन को देखते हैं तो वे एसोसिएशन एक समृद्ध अर्थ देते हैं।

इसलिए जब मैंने एलोहिस्टिक स्तोत्र के बारे में बात की, तो मैं सुझाव दे रहा था कि इसका एक गहरा और समृद्ध अर्थ है जो विनाश और उससे परे आशा से संबंधित है। इसके बाद हल्लेलुजाह स्तोत्र खंडों के समापन का संकेत देते हैं। और मैं उसके बारे में बात कर रहा था और वह होदा, मैं आभारी प्रशंसा दूंगा।

तो, हल्लेलुजाह का उपयोग निष्कर्ष में किया जाता है, या भगवान, होदा को धन्यवाद देते हैं, या भगवान की स्तुति करते हैं। इनका उपयोग खंडों के परिचय के लिए किया जाता है। खैर, वैसे भी, मैं इस बारे में बात करता हूँ कि कैसे अलग-अलग भजनों से भजन एक साथ आए और फिर उन्हें मंदिर को सौंप दिया गया और उन्हें मंदिर के भजन गायन के प्रभारी लेवीय पुजारियों द्वारा एकत्र किया गया।

चौथा चरण भजनों को पाँच पुस्तकों में संग्रहित करना है। पाँच पुस्तकें हैं पहली पुस्तक पुस्तक 1, भजन 1-41 है। दूसरी पुस्तक भजन 42-72 है।

तीसरी पुस्तक भजन 73-89 है। चौथी पुस्तक भजन 90-106 है और पुस्तक 5 107-150 है। पाँच-पुस्तकों की व्यवस्था होने का प्रमाण यह है कि ऐसा प्रतीत होता है कि ये स्तोत्र, जो स्तुतिगान के साथ समाप्त होते हैं, पुस्तक को समाप्त कर देते हैं, लेकिन वे बॉयलरप्लेट नहीं हैं।

प्रत्येक स्तुतिगान अलग है. तो, हो सकता है कि आप पुस्तक 1 के अंत में स्तुतिगान पर एक नज़र डालना चाहें, वह भजन 41 होगा। हम स्तुतिगान में पढ़ते हैं, अनादिकाल से अनन्तकाल तक इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो।

मुझे लगता है कि पुजारियों ने ऐसा कहा है। और लोगों ने उत्तर दिया, आमीन और आमीन, जिसका अर्थ है सच्चा, सच्चा, दृढ़, दृढ़। कि इसका अन्त अनन्तकाल से अनन्तकाल तक इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति के साथ होता है।

मुझे लगता है कि प्रतिक्रिया आमीन और आमीन होगी। फिर आपके पास भजन 72 के अंत में एक समान स्तुतिगान है। यहां हम पढ़ते हैं, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, जो अकेले ही अद्भुत काम करता है।

उसके महिमामय नाम की सदा स्तुति होती रहे। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए। और मुझे लगता है कि लोग आमीन और आमीन के साथ जवाब देते हैं।

पुस्तक 3 के अंतिम भजन को देखते हुए, जो कि भजन 89 और श्लोक 52 होगा, हम पढ़ते हैं, प्रभु की स्तुति सदैव होती रहे। और लोग जवाब देते हैं, आमीन और आमीन। और अंत में, अंतिम पुस्तक 4 भजन 106 और भजन 48 में समाप्त होती है, अनादि काल से अनन्त काल तक इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो।

सब लोग कहें, आमीन। वहां यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लोग संभवतः पुजारी द्वारा गाए गए अंतिम स्तुतिगान और प्रशंसा का जवाब दे रहे हैं। तो, ये स्तुतिगान संभवतः भजन का एक मूल हिस्सा थे।

और उन्हें भजन की विभिन्न पुस्तकों को समाप्त करने के लिए उनके स्तुतिगान के कारण चुना गया था। अब, पुस्तक 5 में उस प्रकार की स्तुति-विद्या नहीं है क्योंकि अंतिम पाँच स्तोत्र 146 से 150 तक केवल प्रभु की स्तुति हैं। इसलिए लगभग सभी स्तोत्र स्तुति-विद्या और ईश्वर की स्तुति हैं।

रब्बियों ने पहचान लिया कि उनके पास पाँच पुस्तकें हैं। तो, हमने पढ़ा, मैं इसे मिड्रैश पर, भजनों पर ब्राउनी के काम से ले रहा हूँ। जैसे मूसा ने इस्राएल को व्यवस्था की पाँच पुस्तकें दीं, वैसे ही दाऊद ने इस्राएल को भजन की पाँच पुस्तकें दीं।

और इसलिए, इन पुस्तकों का नाम उनके पहले शब्दों के आधार पर रखा गया है। तो, पुस्तक 1 का शीर्षक है, धन्य है मनुष्य। पुस्तक 2 का शीर्षक है, मास्किल के नेता के लिए।

पुस्तक 3 को आसाप का भजन कहा जाता है। पुस्तक 4, मूसा की प्रार्थना। और पुस्तक 5, प्रभु के छुड़ाए हुए लोग ऐसा कहें।

ये बहुत पुराना है. यह न केवल रब्बी साहित्य में है, बल्कि कुमरान के एक स्तोत्र में भी है, हमारे पास वास्तव में यह स्तुतिगान संरक्षित है। पाँच पुस्तकों का एक और संकेत, और यह केवल इतना ही नहीं है कि हमारे पास ये स्तुतियाँ हैं, बल्कि इस मामले में, हमारे पास लेखक का परिवर्तन है।

इसलिए परिचय के बाद पहली पुस्तक में, लेखक डेविड हैं और यह लगभग पूरी पहली पुस्तक तक फैला हुआ है। दूसरी किताब भजन 42 से शुरू होती है, जो कोरह के पुत्रों द्वारा लिखी गई है या उनकी है। तीसरी पुस्तक आसाप की है।

चौथी किताब मूसा की है। पाँचवीं पुस्तक, अधिक कृत्रिम विभाजन प्रतीत होती है। भजन 107 में हमें कोई लेखक नहीं दिया गया है।

मुझे लगता है कि यहाँ हमारे उद्देश्यों के लिए यह पर्याप्त है कि हम देख सकें कि स्तोत्र की पाँच पुस्तकें हैं और इसके कुछ प्रमाण भी हैं। इसलिए, वे दाऊद और मूसा के रिश्ते को पहचान रहे थे। जैसा कि मैंने कहा, मूल रूप से मूसा ने कल्टस दिया और डेविड ने इसे ओपेरा में बदल दिया।

तो, वे साहित्य में, रब्बी साहित्य में, मूसा की पाँच पुस्तकों और डेविड की पाँच पुस्तकों के बीच संबंध देख रहे हैं। आप जानते हैं, मैथ्यू को पाँच भागों में विभाजित करने के बारे में कुछ चर्चाएँ हैं। दूसरे शब्दों में, क्या यह पाँच गुना पैटर्न कैनन में कहीं और है? मुझे लगता है कि मेगालॉट में पाँच पुस्तकें हैं।

मुझे लगता है कि यह सही है, लेकिन मुझे ऐसा करना होगा, मुझे पूरा यकीन है कि यह सही है। मेरे मन में यही आता है. तो, दूसरे शब्दों में, मैथ्यू में, यह सिर्फ एक पैटर्न हो सकता है कि वह, क्योंकि वह यहूदी है, वह पाँच के बड़े टुकड़े देखने का आदी है।

ठीक है। हाँ। खैर, पुराने नियम में, यह मेगालॉट के साथ हो सकता है।

आपके पास पेंटाटेच होगा। आपके पास भजन संहिता की पाँच पुस्तकें होंगी और आपके पास पाँच मेगालोट हो सकते हैं, जो पैटर्न हो सकता है जो उस पर प्रभाव डाल सकता है। मुझे उन शब्दों में सोचना उचित लगता है।

यदि आपने पाँच पुस्तकों में से प्रत्येक में से कुछ लीं और हिब्रू में शब्दावली और किताबों की लय जैसी चीजों की तुलना की, तो क्या आप बता सकते हैं कि कौन सी किताबें किस किताब से थीं? क्या उन्होंने भिन्न शब्दावली का प्रयोग किया? क्या उन्होंने किताबें लिखते समय अलग-अलग लय का इस्तेमाल किया? नहीं - नहीं। मैंने किसी को ऐसा प्रयास करते नहीं देखा। कुछ लोगों ने पाँच पुस्तकों को पुस्तक एक की तरह रखने का प्रयास किया है ताकि इसे उत्पत्ति के साथ जोड़ा जा सके, लेकिन यह काम नहीं करता है।

नहीं, और जब मैंने हिब्रू कविता पर चर्चा की, तो आप देख सकते थे कि मैं इसे हर जगह से चित्रित कर रहा था। अब कविता और बाइबिल कविता और सदियों बाद बनी कुमरान कविताओं के बीच एक विरोधाभास है। उस कविता में एक अंतर है।

लेकिन स्वयं भजनों में, आप इसे नहीं देखते हैं। और यह भी, कि डेविडिक सामग्री सभी पुस्तक एक डेविड है। जैसा कि मैंने कहा, एलोहिस्टिक स्तोत्र, 42 से 83 तक का यह एलोहिस्टिक स्तोत्र, वे 42 स्तोत्र।

मेरे लिए यह दिलचस्प है कि तीसरी किताब इसके बीच में शुरू होती है, जो मुझे बताती है कि पांच किताबों में विभाजन एलोहिस्टिक साल्टर के गठन की तुलना में बाद में हुआ है क्योंकि यह अब दो किताबों में विभाजित हो गया है। तो, एलोहिस्टिक स्तोत्र पुस्तक दो और पुस्तक तीन में है। और इसलिए, आपके पास पुस्तक दो में डेविडिक भजन हैं।

हम हैं या नहीं, मुझे याद नहीं। नहीं, हमारे पास पुस्तक तीन या पुस्तक चार में डेविड द्वारा कोई भजन नहीं है, लेकिन हमारे पास डेविड द्वारा पुस्तक पांच में कई भजन हैं, जो कि अजीब है क्योंकि हमारे पास पहले से ही यिश्ई के पुत्र डेविड के भजन समाप्त हो चुके हैं, जो भजन संहिता की पुस्तक के निर्माण के प्रारंभिक चरण को दर्शाता है। किताब एक और तीन तथा किताब चार और पांच के बीच विरोधाभास है।

और प्रतीत होता है कि पुस्तकें एक और तीन का निर्माण पुस्तकों चार और पाँच से पहले हुआ था। और मैंने इसे वहाँ एक साथ रखने की कोशिश की और वे कैसे भिन्न हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं इसे और विकसित करना चाहता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि इस सामग्री का कुछ कालानुक्रमिक विकास है, पहली पुस्तक, जो कि डेविड द्वारा लिखी गई है, संभवतः एक पुराना संग्रह है।

लेकिन मैं इससे आगे नहीं जाना चाहता। यह मेरे लिए कुछ ज्यादा ही अटकलबाजी है। चरण पाँच, फिर हमने अलग-अलग भजनों को देखा।

हमने देखा कि वे सभी मन्दिर को सौंप दिये गये। हमने देखा कि भजन गाने के लिए जिम्मेदार लेवियों ने उन्हें शैली, लेखक और सामग्री एकत्र करने की अन्य तकनीकों के अनुसार एकत्र किया। फिर हमने चौथे चरण को देखा जहाँ ये पांच पुस्तकें हैं और अंतिम चरण स्वयं कैनन है।

अब एक अकादमिक पाठ्यक्रम में, मुझे कम से कम कुमरान में कैनन का उल्लेख करना चाहिए, विशेष रूप से एक स्कॉल जिसे 11क्यू भजन कहा जाता है। इसका मतलब है कि यह गुफा 11 से बाहर आया था। और यह गुफा 11 से निकली स्तोत्र की पहली पुस्तक है।

इसमें मसोरेटिक पाठ की तुलना में आठ अधिक भजन हैं। और कुमरान स्कॉल में कुछ अलग व्यवस्था है। इससे सवाल उठता है कि क्या कुमरान समुदाय के पास मसोरेटिक पाठ में संरक्षित कैनन से अलग कैनन था? इस बारे में आपके पास दो विचारधाराएं हैं।

अर्थात्, आपके पास पैट्रिक स्केहान हैं, यह शेमायाहू टैल्मन हैं, एक रोमन कैथोलिक और एक यहूदी विद्वान हैं। उनका मानना है कि कुमरान स्कॉल वास्तव में एक धार्मिक पुस्तक है। यह वास्तव में बाइबल बनने की कोशिश नहीं कर रहा है।

यह धर्मविधि में उपयोग के लिए बनाई गई रचना थी, लेकिन इसे वास्तव में कभी बाइबल नहीं माना गया। पीटर फ्लिंट और जेम्स सैंडर्स जैसे अन्य लोगों का मानना है कि कुमरान में वास्तव में एक अलग सिद्धांत था। मुझे लगता है कि सबूत उनकी व्याख्या के पक्ष में हैं क्योंकि अन्य कुमरान स्कॉल में भी कुछ भिन्नताएं हैं और यह संदिग्ध है कि वे सभी धार्मिक थे।

यह हो सकता है, लेकिन आमतौर पर यह तर्क दिया जाता है कि वे संभवतः विहित थे। लेकिन आपको यह याद रखना होगा कि कुमरान जैसे भी थोड़ा जिद्दी था। यह यहूदी धर्म के भीतर एक विशिष्ट धार्मिक संप्रदाय था और मंदिर और रब्बीनिक यहूदी धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं करता था।

इसलिए यह संभव है कि उनके पास थोड़ा अलग सिद्धांत हो। मैंने आपको वहां डेटा दिया है और मैं आपको इसके बारे में एक फुटनोट देता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि स्तोत्रों के परिचय के लिए हमें बस इतना ही करना होगा।

अब मैं पृष्ठ 344 पर आता हूँ, और यह रोमन अंक तीन होना चाहिए, कैनन को आकार देने का महत्व। यह कहता है, डेलिट्ज़, संग्रह एक आदेश देने वाले दिमाग की छाप रखता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अंततः कोई संपादक था जिसने पूरी चीज़ को एक साथ रखा।

इसका प्रमाण यह है कि यह इन दो परिचयात्मक भजनों से शुरू होता है, भजन 1 और 2, जो एक परिचय है, और अंतिम पांच भजन, जो सभी प्रशंसा हैं। ऐसा लगता है मानो एक ही संपादक है जिसने इसका परिचय और निष्कर्ष दिया और संभवतः इसे इस अंतिम रूप में व्यवस्थित किया, जिसमें यह हमारे पास है। तब क्या होता है कि अब हमारे पास एक किताब है और मूल रूप से भजन राजा और लोगों के भगवान के लिए कहे गए शब्द थे।

लेकिन अब पवित्रशास्त्र के दायरे में इस पुस्तक में भगवान के लिए उनके शब्द आस्था के समुदाय के लिए भगवान के शब्द के रूप में वापस आते हैं। और इसलिए, भजनों में, वे भगवान के शक्तिशाली कार्यों का जश्न मना रहे हैं, लेकिन स्तुतिगान में, वे भगवान के शक्तिशाली शब्दों का जश्न मना रहे हैं। और वे इन शब्दों में परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं।

इसलिए, पुरोहित संपादकों ने मंदिर की पूजा-अर्चना में इस्तेमाल होने वाले भजनों को आराधनालय में चिंतनशील ध्यान में बदल दिया। तो, अंतिम रूप संभवतः आराधनालय में ध्यान के लिए आराधनालय में होता है। दूसरे शब्दों में, जब हम उपदेश में भजनों का उपयोग करते हैं, तो हम अंतिम संपादक के उद्देश्य के साथ पूरी तरह से सुसंगत होते हैं जो चाहता है कि हम ईश्वर के संपूर्ण वचन को प्रतिबिंबित करें और संभवतः उसका प्रचार करें।

जेनी के अनुसार, लोगों का आमीन अब ईश्वर के कार्यों का नहीं, बल्कि ईश्वर के शब्दों, शक्तिशाली शब्दों का जवाब देता है। अब, दिलचस्प बात यह है कि ऐसा लगता है जैसे भजनों को राजा पर ध्यान केंद्रित करके संपादित किया गया था। और यहाँ उसके लिए सबूत है।

खैर, हमने भजन 1 और 2 के परिचय के बारे में बात की। भजन 1 पुस्तक के शिक्षकों को संदर्भित कर सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह संदर्भित करता है, जब वह कहता है कि वह दिन-रात टोरा में ध्यान करता है, तो मुझे लगता है कि उसका मतलब मोज़ेक है टोरा। लेकिन

भजन 2, जो परिचय का हिस्सा है, राजा के लिए राज्याभिषेक की पूजा है। और हमें राजा से मिलवाया गया।

और वहां से, भजन 33 को छोड़कर, जो कि एक विसंगति है, वे सभी डेविड द्वारा हैं, लेकिन वे सभी डेविड द्वारा हैं। और हम प्रार्थना में राजा को सुनते हैं। भजन 2, उन्होंने कहा, हे मेरे पुत्र, मुझ से मांग, मैं जाति जाति को तेरा निज भाग कर दूंगा।

पृथ्वी के छोर पर तुम्हारा अधिकार है। वह इसे एक सार्वभौमिक साम्राज्य तक विस्तारित करता है। और वहां से, हम राजा को प्रार्थना करते हुए, ईश्वर से राष्ट्रों पर विजय की प्रार्थना करते हुए सुनते हैं।

और वह पहली किताब होगी। पुस्तक का दूसरा भाग यिश्शै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाओं के साथ समाप्त होता है। दिलचस्प बात यह है कि यह भजन खुद सुलैमान का है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह डेविड की प्रार्थनाओं में भी शामिल है।

मुझे लगता है कि यह काफी हद तक अय्यूब की किताब के समान है जहां हमें बताया गया है कि अय्यूब के शब्द समाप्त हो गए हैं, लेकिन अय्यूब के शब्दों में एलीपज, बिलदद और सोफर के शब्द भी शामिल हैं। लेकिन अय्यूब मुख्य वक्ता है। और इस सामग्री में मुख्य प्रार्थना डेविड होगी क्योंकि पुस्तक दो में भी हमारे पास डेविडिक मूल था।

तो, आप प्रगति देख सकते हैं क्योंकि भजन 2 एक राज्याभिषेक पूजा है, मुझसे पूछो, मेरे बेटे। और ध्यान दें कि भजन 72 में क्या होता है, यह इसे अब राजा के सार्वभौमिक शासन तक कैसे विस्तारित करता है, समय में सार्वभौमिक और अंतरिक्ष में सार्वभौमिक दोनों। हम भजन 72 पढ़ते हैं, हे भगवान, राजा को अपना न्याय प्रदान करो।

देखें कि यह तुरंत राजा के साथ कैसे शुरू होता है। इसकी शुरुआत भजन 2 से हुई, दाऊद की प्रार्थनाओं का अंत होता है, हे भगवान, राजा को अपना न्याय प्रदान करो, राजपुत्र को अपनी धार्मिकता प्रदान करो। वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से, और तेरे दीनों का न्याय न्याय से करे।

पहाड़ लोगों के लिए समृद्धि, पहाड़ियाँ, धार्मिकता का फल लाएँ। वह लोगों के बीच पीड़ितों की रक्षा करे और जरूरतमंदों के बच्चों की रक्षा करे। क्या वह अत्याचारी को कुचल सकता है?

वह सभी पीड़ियों तक सूर्य के समान, चंद्रमा के समान दीर्घकाल तक जीवित रहे। वह कराहते खेतों पर होने वाली वर्षा के समान, और भूमि को सींचने वाली वर्षा के समान हो। उनके दिनों में, जब तक चंद्रमा नहीं रहेगा तब तक धर्मी लोग फलते-फूलते रहें और समृद्धि बनी रहे।

तो, यह समय में उनके सार्वभौमिक नियम के बारे में बात करता है। और अब यह अंतरिक्ष में उसके सार्वभौमिक नियम में बदल गया है। वह समुद्र से समुद्र तक, नदी से पृथ्वी के छोर तक शासन करे।

मरुभूमि के गोत्र उसके सामने झुकें और उसके शत्रु धूल चाटें। तर्शीश के राजा, जो उसके साथ हैं, पृथ्वी के छोर तक, स्पेन और सुदूर तटों के राजा उसे श्रद्धांजलि दें। शेबा और सबा के राजा उसे उपहार भेंट करें।

सभी राजा उसे दण्डवत करें और सभी राष्ट्र उसकी सेवा करें। तो, इसकी शुरुआत राजा को प्रार्थना करने के निमंत्रण से होती है। हम राजा को प्रार्थना करते हुए देखते हैं।

यह राजा के लिए इस अंतिम प्रार्थना के साथ समाप्त होता है कि वह एक ऐसे राज्य की स्थापना करेगा जो शाश्वत और समय में सार्वभौमिक और अंतरिक्ष में सार्वभौमिक है। तो आम तौर पर आपको वृद्धि मिलने वाली है। तो, पहली किताब में, डेविड लगभग हमेशा संकट में है, लेकिन वह हमेशा जीत के साथ उभरता है और अंत में प्रशंसा की प्रतिज्ञा करता है।

जब हम अधिकांश स्तोत्रों में पहुँचते हैं, तो हम पहले ही निर्णय के साथ एलोहिस्टिक स्तोत्र के बारे में बात कर चुके होते हैं और फिर भी इसके बीच में आशा होती है। लेकिन डेविड के विलाप आमतौर पर विलाप या शिकायत से अंत में प्रशंसा की ओर बढ़ते हैं। अब, जब हम तीसरी किताब में आते हैं, तो हम स्तोत्र की सबसे अंधेरी किताब में आते हैं।

यह वह है जिसकी शुरुआत यह दिखाने से होती है कि ईश्वर इसराइल के लिए अच्छा है। परन्तु जहाँ तक मेरी बात है, जब मैंने दुष्टों की समृद्धि देखी तो मेरे पैर लगभग फिसल गए थे। फिर यह भजन 74 में आगे बढ़ता है और इसकी शुरुआत मंदिर के विनाश से होती है।

हे भगवान, तू ने हम को सदा के लिये क्यों अस्वीकार कर दिया? आपका गुस्सा आपके पादरी की भेड़ों के खिलाफ क्यों सुलग रहा है? उस जाति को स्मरण करो जिसे तू ने बहुत पहिले मोल लिया है, और अपने निज भाग के लोगोंको तू ने छुड़ा लिया है, अर्थात् सिथ्योन पर्वत को जहाँ तू रहता था। अपने कदम इन शाश्वत खंडहरों की ओर बढ़ाएँ। यह सारा विनाश शत्रु ने पवित्रस्थान पर किया है।

जिस स्थान पर तुम हम से मिले थे, वहाँ तुम्हारे शत्रु गरज रहे थे। उन्होंने अपना मानक एक तरफ रख दिया। उन्होंने पेड़ों के झुरमुट को काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाने वाले पुरुषों की तरह व्यवहार किया।

उन्होंने सभी नक्काशीदार चौखटों को अपनी कुल्हाड़ियों और हैचों से तोड़ डाला। उन्होंने तुम्हारे पवित्रस्थान को जलाकर राख कर दिया। तो, भजन 4 मंदिर के विनाश पर शोक व्यक्त करता है।

लेकिन इसके बीच में आपके पास प्रशंसा के कुछ भजन भी हैं, लेकिन अन्य लोग मंदिर के विनाश पर शोक भी मना रहे हैं। जैसा कि हमने कहा, भजन 88, फिर से, भजन की सबसे काली किताब है। भजन 89 डेविडिक वाचा की विफलता के साथ समाप्त होता है।

यह भजन 89 है। इसलिए, यह राजा के संदर्भ में समाप्त होता है। मैं फिर से तर्क दे रहा हूँ कि पुस्तक राजा के इर्द-गिर्द व्यवस्थित है।

और इसलिए, भजन 2 और 72 सभी राजा के बारे में हैं। भजन 41 के लिए मामला बनाया जा सकता है क्योंकि यह न्याय के उद्देश्य से संबंधित है। लेकिन कुछ सामग्री पर नजर डालें।

आप देख सकते हैं कि अब कैसे, जबकि भजन 72 एक सार्वभौमिक राज्य के लिए प्रार्थना के साथ समाप्त हुआ, फिर भी 89 में, यह विफलता है। तो, हम भजन 89 में पढ़ते हैं, मैं सदैव प्रभु के महान प्रेम का गीत गाऊंगा। मैं अपने मुँह से तेरी सच्चाई पीढ़ी पीढ़ी तक प्रगट करूंगा।

मैं घोषणा करूंगा कि तेरा प्रेम सर्वदा अटल है, कि तू ने अपनी सच्चाई ऊपर स्वर्ग में दृढ़ की है। तो, वह एक ज़बरदस्त शिकायत करने जा रहा है कि भगवान ने अपने लोगों को त्याग दिया है, लेकिन यह हमेशा प्रशंसा में छिपा रहता है। यह उन बिंदुओं में से एक है जो मैं कह रहा हूँ।

तू ने कहा है, मैं ने अपने चुने हुए के साथ वाचा बान्धी है। मैं ने अपने सेवक दाऊद से शपथ खाई है। मैं तेरे वंश को सदैव स्थिर रखूंगा, और पीढ़ी पीढ़ी तक तेरी राजगद्दी बनाए रखूंगा।

और इसलिए, वह यहां दाऊद की वाचा और दाऊद के घराने के लिए परमेश्वर की वाचा का पाठ करता है। उदाहरण के लिए, श्लोक 19 में, एक बार आपने अपने वफ़ादार लोगों से एक दर्शन में बात की, आपने कहा, मैंने एक योद्धा को शक्ति प्रदान की। मैंने लोगों के बीच से एक नवयुवक को खड़ा किया है।

मुझे अपना सेवक दाऊद मिला और मैंने अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है। मेरा हाथ उसे संभालेगा. निःसन्देह मेरी भुजा उसे दृढ़ करेगी।

शत्रु उस पर हावी नहीं हो पाएगा। दुष्ट उस पर अन्धेर न करेंगे। मैं उसके शत्रुओं को उसके साम्हने से कुचल डालूंगा, और उसके प्रतिद्वंद्वियों को मार डालूंगा।

मेरा सच्चा प्रेम उसके साथ रहेगा। और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊंचा किया जाएगा। मैं उसका हाथ समुद्र पर और उसका दाहिना हाथ नदियों आदि पर रखूंगा।

फिर वह पद 30 में वाचा की शर्तें देता है, यदि उसके पुत्र मेरी व्यवस्था को त्याग दें और मेरी विधियों का पालन न करें, यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें और मेरी आज्ञाओं का पालन करने में असफल हों, तो मैं उनके पाप का दण्ड छड़ी से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़े से दूँगा। . लेकिन श्लोक 35 में, वह कहता है, एक बार के लिए, ओह, श्लोक 33, लेकिन मैं उससे अपना प्यार नहीं छीनूंगा। न ही मैं कभी अपनी वफ़ादारी को धोखा दूँगा।

मैं अपनी वाचा का उल्लंघन नहीं करूँगा या जो कुछ मेरे होठों ने कहा है उसमें परिवर्तन नहीं करूँगा। एक बार और हमेशा के लिए, मैंने अपनी पवित्रता की शपथ ली है। मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूंगा कि उसका वंश सदैव बना रहेगा और उसका सिंहासन मेरे सामने सूर्य के समान बना रहेगा।

वह आकाश में वफ़ादार गवाह चाँद की तरह हमेशा के लिए स्थापित हो जाएगा। परन्तु अब विलाप आता है, परन्तु तू ने अस्वीकार किया है। आपने ठुकरा दिया है।

तू अपने अभिषिक्त पर बहुत क्रोधित हुआ है। तू ने अपने दास के साथ की हुई वाचा को तोड़ दिया, और उसके मुकुट को मिट्टी में मिला कर अशुद्ध कर दिया है। तुमने उसकी सभी दीवारों को तोड़ दिया है और उसके गढ़ों को खंडहर में तब्दील कर दिया है।

सब आने जानेवालों ने उसे लूट लिया है, और वह अपने पड़ोसियों की घृणा का पात्र बन गया है। आपने शत्रु का दाहिना हाथ ऊंचा कर दिया है। और इस प्रकार वह दाऊद की वाचा के साथ समाप्त होता है जो प्रतीत होता है कि विफल हो गई है क्योंकि सज़ा अब दाऊद के घराने को दी गई है।

और यहीं पर तीसरी पुस्तक समाप्त होती है। यह निर्वासन के साथ दाऊद की वाचा की विफलता के साथ समाप्त होता है। मैं विल्सन के साथ बहस कर रहा हूँ, यह काफी हद तक राजा के आसपास है।

मुझे लगता है कि आप पुस्तक तीन के समापन पर भजन 2, भजन 72 और भजन 89 में इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। लेकिन यहां कुछ घटित होता है और तुरंत हम मूसा के पास जाते हैं जिसका उपयोग भगवान ने राष्ट्र की स्थापना के लिए किया था। और यही वह जगह है जहां आप पहुंचते हैं, हे भगवान, मुझे आशा है कि एक युग बीत चुका है।

यद्यपि दाऊद का घराना विफल हो गया है और उसने वाचा का पालन नहीं किया है, फिर भी, परमेश्वर असफल नहीं होता है। और इसलिए वह इस तरह से शुरू करता है, हे प्रभु, आप पहाड़ों के जन्म से पहले की सभी पीढ़ियों में हमारा निवास स्थान रहे हैं या आपने पूरी दुनिया को अनादि से अनन्त तक उत्पन्न किया है। आप भगवान हैं।

और इसी संदर्भ में हमें सिंहासनारूढ़ भजन मिलते हैं कि ईश्वर शासन करता है। इसलिए यद्यपि दाऊद का घराना असफल हो जाता है, परमेश्वर असफल नहीं होता। वह अब भी राज करता है।

और वही वह है जो अंततः पृथ्वी पर न्याय लाएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि पुस्तक तीन निर्वासन के आलोक में लिखी गई है, तो पुस्तक चार संभवतः निर्वासन के दौरान लिखी गई प्रतीत होती है। और वे उस ईश्वर की ओर देख रहे हैं जिसने राष्ट्र की स्थापना की।

मूसा का उल्लेख भजन संहिता में केवल एक बार किया गया था, एक से तीन पुस्तकों में, मुझे लगता है कि यह भजन 77 है। चौथी पुस्तक में, उसका सात बार उल्लेख किया गया है। दूसरे शब्दों में, यह फिर से शुरुआत की ओर लौट रहा है।

और परमेश्वर दाऊद के घराने से आगे निकल गया। उनका अस्तित्व दाऊद के घराने पर निर्भर नहीं है। उनका अस्तित्व जीवित ईश्वर पर निर्भर है।

भजन 106 जो चौथी पुस्तक को समाप्त करता है वह यह है कि वे भगवान से उन्हें निर्वासन से छुड़ाने के लिए कहते हैं। भजन 106 और श्लोक 47 को देखो, हे प्रभु हमारे परमेश्वर हमें बचा,

और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर, कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरे नाम की महिमा करें। और फिर आपको स्तुतिगान मिलता है।

तो, पुस्तक चार की समापन प्रार्थना, जहां वे मूसा के पास वापस जाते हैं और भगवान पार हो गए हैं। अब वे ईश्वर से उन्हें, जो प्रवासी हैं, राष्ट्रों से इकट्ठा करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। बुक फाइव पिक्स उस पर आधारित है।

और भजन 107 का पहला श्लोक भजन 106 के अंतिम श्लोक से मेल खाता है। भजन 107, प्रभु को धन्यवाद दें क्योंकि वह अच्छा है। उसका प्रेम सदैव बना रहता है।

प्रभु के छोड़ाए हुए लोग, अर्थात् शत्रु के हाथ से छोड़ाए गए लोग, अपनी कहानी कहें। उन लोगों पर ध्यान दें जिन्हें उसने देश से, पूर्व और पश्चिम से, उत्तर और दक्षिण से इकट्ठा किया। तो, चौथी पुस्तक समाप्त हुई जो हमें राष्ट्रों से एकत्रित करती है।

और फिर पुस्तक पाँच शुरू होती है, उसने उन लोगों को इकट्ठा किया जिन्हें उसने देशों से इकट्ठा किया था, पूर्व और पश्चिम से, उत्तर से दक्षिण तक, जब वह अपने लोगों को वापस लाया। और इस संदर्भ में, हमें कुछ और मसीहाई भजन मिलते हैं। इस पुस्तक में हमें महान भजन 110 मिलता है, कि एक राजा होगा जो समुद्र से समुद्र और तट से तट तक शासन करेगा और जो पृथ्वी के छोर तक शासन करेगा।

तो, मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि भजन की पुस्तक में राजा एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और मुझे लगता है, जैसा कि हमने मसीहाई भजनों पर बात की थी, कि वे अंततः हमारे प्रभु के बारे में बात करते हैं जो उन्हें पूरा करते हैं। और मुझे लगता है कि पाठ्यक्रम को समाप्त करने के लिए यह एक अच्छा नोट है।

और हम इसे वहीं रोक देंगे. क्या आप प्रार्थना में बंद हो सकते हैं? ज़रूर। पिता, आपका धन्यवाद कि आपने हमें भविष्यवाणी का एक निश्चित शब्द दिया, भविष्यवाणी शब्द और प्रकार दोनों में।

धन्यवाद प्रभु, कि वे उस पुत्र के विषय में बोलते हैं जिससे आप प्रसन्न हैं। वह बेटा, जिसने हमारे दिलों को प्रभावित किया है, कि हम उस पर भरोसा करते हैं। आपका धन्यवाद कि वह अपना राज्य बना रहा है और आपने हमें चुना है जो बिना किसी वंशावली वाले व्यक्ति थे।

आपने हमें इस राज्य का हिस्सा बनने के लिए चुना है। और आपने हमारे दिलों में आपके लिए प्यार, हमारे पड़ोसी के लिए प्यार, धार्मिकता के लिए प्यार डाला है। और तू ने हमारे हृदयों में सत्य और त्रुटि, सत्य और असत्य को परखने की शक्ति उत्पन्न की है।

धन्यवाद कि हमने इस बार भजनों की पुस्तक में एक साथ समय बिताया जहां हमने आपके बारे में सीखा। हमने ज्ञान सीखा है और हमने अपने प्रभु के बारे में सीखा है। और इसलिए भगवान, आपने हमारी प्रार्थना का उत्तर दिया है।

हम आपसे हमारे विश्वास में सार जोड़ने के लिए कहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, प्रभु, हम अपने सद्गुणों के प्रति उत्साह का अनुभव कर सकें, कि हमें अपने बयानों पर अधिक भरोसा हो सके, और जब हमारी परीक्षा होगी तो हम निष्ठा के प्रति उत्साहित होंगे। इस कक्षा में भाग लेने वाले प्रत्येक छात्र को धन्यवाद ।

आपकी जय हो प्रभु! और सभी विद्यार्थी कहें, आमीन और आमीन। मसीह के नाम पर, आमीन।

यह भजन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. ब्रूस वाल्टके हैं। यह सत्र 28 है, स्तोत्र का संपादन।